इकाई 14 भर्तृहरि शतकत्रय परिचय

इकाई की रूपरेखा

14.0 उद्देश्य

14.1 प्रस्तावना

14.2 भर्तृहरि का परिचय

14.3 भर्तृहरि का सामाजिक अनुभव

14.4 शतकत्रय का परिचय

- 14.4.1 नीतिशतक
- 14.4.2 शृंगारशतक
- 14.4.3 वैराग्यशतक

14.5 नीतिशतक का प्रतिपाद्य

14.6 सारांश

14.7 शब्दावली

14.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

14.9 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

14.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप–

- भर्तृहरि के जीवन-परिचय से परिचित हो जायेंगे।
- भर्तृहरि की काव्य-शैली से परिचित हो जायेंगे।
- भर्तृहरि द्वारा रचित ग्रन्थों के बारे में ज्ञान प्राप्त कर लेंगे, विशेषकर नीतिशतक के प्रतिपाद्य विषय का विस्तार से ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- भर्तृहरि का संस्कृत-साहित्य में महत्त्व तथा इनके योगदान से परिचित हो सकेंगे।
- आप संस्कृत भाषा की शब्दावली स्मरण कर पायेंगे।

14.1 प्रस्तावना

इकाई संख्या 12 संस्कृत पद्य-साहित्य के अन्तर्गत आती है। इसके अन्तर्गत भर्तृहरि का परिचय दिया गया है।

विश्व में संस्कृत काव्यशास्त्र की एक समृद्ध परम्परा है। यह मुख्यतः द्विविधरूप से विभाज्य है– गद्य और पद्य। पद्य परम्परा के अनेक विभाग-प्रविभाग हैं, जिसमें से एक गीतिकाव्य है, गीतिकाव्य का एक उपभेद मुक्तक काव्य है। भर्तृहरि को मुक्तक काव्य परम्परा के अग्रणी कवि के रूप में सर्वसम्मति से स्थापित किया गया है। इन्होंने शतकत्रय अर्थात् नीतिशतक, शृंगारशतक तथा वैराग्यशतक नामक मुक्तक काव्य की रचना की है। अतः इस इकाई में भर्तृहरि का परिचय, उनकी काव्यशैली, शतकत्रय का परिचय तथा वैशिष्ट्य का अध्ययन

किया जायेगा, जिसके माध्यम से सम्पूर्ण संस्कृत काव्यशास्त्र में भर्तृहरि के योगदान को समझने में सरलता होगी।

14.2 भर्तृहरि का परिचय

भारतीय संस्कृत साहित्य में भर्तृहरि एक महत्त्वपूर्ण कवि के रूप में स्थापित हैं। अपने गीतिकाव्य के माध्यम से रससिद्ध कवीश्वरों के मध्य में इन्होंने एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। विद्वानों ने इन्हें महाकवि और महाविद्वान् बताया है। इनके विषय में एक अज्ञातकर्तृक श्लोक इस प्रकार है–

महान्तः कवयः सन्तु महान्तः पण्डितास्तथा।
महाकविर्महाविद्वान् एको भर्तृहरिर्मतः।।

इनके द्वारा रचित काव्य-श्लोकों का स्पष्ट प्रभाव इनके परवर्ती अनेक कवियों पर दृष्टिगोचर होता है। कालिदास जैसे महान् कवि भी भर्तृहरि की रचनाओं से प्रभावित हैं। अभिज्ञानशाकुन्तलम् का 'भवन्ति नम्रास्तरवः फलागमैः' नामक श्लोक इसका स्पष्ट उदाहरण है, जो कि मूलतः भर्तृहरि के नीतिशतक का श्लोक है। विशाखदत्त का मुद्राराक्षस, केशवमित्र का अलंकारशेखर, रुय्यक का अलंकारसर्वस्व, क्षेमेन्द्र का औचित्यविचारचर्चा, कविकण्ठाभरण और सुवृत्ततिलक, मम्मट का काव्यप्रकाश, गोविन्द का कार्यप्रदीप, वाग्भट्ट का काव्यानुशासन, भोजराज का सरस्वतीकण्ठाभरण आदि ग्रन्थों में भर्तृहरि के श्लोकों का स्पष्ट प्रभाव दिखायी देता है।

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से भर्तृहरि के जीवन के विषय में कुछ विशेष ज्ञात नहीं है। अन्य प्राचीन भारतीय विद्वानों के सदृश ही इन्होंने स्वयं के विषय में कोई विशेष जानकारी नहीं दी है। आधुनिक काल के संस्कृत साहित्य के इतिहास के विद्वानों ने इनके जीवन के विषय में जो कुछ भी निष्कर्ष निकाला है, उसका आधार अधिकांशतः किंवदन्तियां और दन्तकथाएं हैं। यही कारण है कि इनके माता-पिता, जन्मकाल और कर्तृत्व के विषय में एकमत स्थापित नहीं हो पाया है।

भर्तृहरि के जीवनवृत्त के विषय में प्रसिद्ध कुछ किंवदन्तियां इस प्रकार हैं–

1. एक जनकथा के अनुसार महाकवि भर्तृहरि के पिता का नाम वीरसेन था। वे गन्धर्व जाति के थे तथा इनकी चार सन्तानें थीं– भर्तृहरि, विक्रमादित्य, सुभटवीर्य तथा मेनावती।

2. एक दन्तकथा के अनुसार भर्तृहरि की पत्नी का नाम पद्माक्षी था तथा वह मगध के राजा सिंहसेन की पुत्री थीं।

3. अन्य कथा के अनुसार भर्तृहरि की पत्नी का नाम अनंगसेना था।

4. अन्य जनश्रुति के अनुसार भर्तृहरि की माता का नाम सुशीला देवी था, जो जम्बूद्वीप के राजा की एकमात्र सन्तान थीं, अन्य कोई सन्तान नहीं थी। अतः सुशीला देवी के पिता अर्थात् भर्तृहरि के नाना ने अपना सम्पूर्ण राज्य भर्तृहरि को सौंप दिया था। राजा भर्तृहरि ने उज्जयिनी को अपने राज्य की राजधानी बनाया। बाद में राजा भर्तृहरि ने विक्रमादित्य को राजसिंहासन का दायित्व देकर सुभटवीर्य को राज्य का सेनापति बनाया।

5. एक अन्य कथा के अनुसार भर्तृहरि उज्जयिनी के राजवंश से सम्बन्ध रखते हैं और यह राजा विक्रमादित्य, जो कि विक्रम संवत् के प्रवर्तक माने जाते हैं, इनके ज्येष्ठ

भ्राता थे। अतः राजा बनने के अधिकारी भर्तृहरि थे। पिंगला नाम की इनकी एक रानी थी, जिसकी स्वामी-भक्ति पर इन्हें अटूट विश्वास था, किन्तु पिंगला की दुश्चरिता की घटना के कारण भर्तृहरि की संसार से विरक्ति हो गयी थी और इन्होंने अपना राज्य अपने कनिष्ठ भ्राता को प्रदान कर वैराग्य ले लिया।

6. इन सब दन्तकथाओं से बिल्कुल भिन्न कथा शेषगिरिशास्त्री के द्वारा कथित है। शेषगिरिशास्त्री के अनुसार राजा विक्रमादित्य चन्द्रगुप्त नाम के एक ब्राह्मण के पुत्र थे। चन्द्रगुप्त ने चार विवाह किये थे इनकी पत्नियों के नाम क्रम से इस प्रकार हैं– ब्राह्मणी, भानुमती, भाग्यवती एवं सिन्धुमती। ये चारों रानियाँ क्रम से ब्राह्मण, क्षत्रिया, वैश्या तथा शूद्र थीं। इन चारों ने एक-एक पुत्र को जन्म दिया था, जिनका नाम क्रम से इस प्रकार था– वररुचि, विक्रमार्क, भट्टि तथा भर्तृहरि। इनमें से विक्रमार्क राजा बने एवं भट्टि इनके मन्त्री थे।

7. चीनी यात्री इत्सिंग ने भी एक किंवदन्ती का उल्लेख किया है कि भर्तृहरि ने सात बार गृहत्याग किया और पुनः गृहस्थ बने और अन्त में यह बौद्ध बने। किन्तु इनके बौद्ध होने को अधिकांश विद्वानों ने अस्वीकार कर दिया।

इस प्रकार इन किंवदन्तियों एवं जनश्रुतियों से इतना स्पष्ट है कि भर्तृहरि किसी राजवंश से अवश्य सम्बन्ध रखते थे तथा इनके भ्राता का नाम विक्रमादित्य तथा स्त्री का नाम पिंगला था। भर्तृहरि स्त्रियों के प्रति किसी भी प्रकार की श्रद्धा नहीं रखते थे, उनके अनुसार स्त्रियाँ अनेक प्रकार के दुर्गुणों से युक्त होती हैं, अतः इनके प्रति आसक्ति मनुष्य को नाश की ओर अग्रसारित करती हैं। यह भोग-विलास का प्रतीकात्मक स्वरूप है। अतः इनके प्रति वैराग्यभाव रखना ही कल्याणकारी है। अपने इसी मनोभाव को इन्होंने वैराग्यशतकम् नामक ग्रन्थ में पिरोया है।

बलदेव उपाध्याय के अनुसार यह शैव या वेदान्तोपासक थे, इसकी पुष्टि इनके दो ग्रन्थों नीतिशतक एवं वाक्यपदीयम् के मंगलाचरण से होती है। महाभाष्य टीका के पर्यनुशीलन से भी इस बात की पुष्टि हो जाती है, कि यह वैदिक धर्मी थे ।

जिस प्रकार इनके माता-पिता, परिवार, कुल के विषय में संशय की स्थिति है, उसी प्रकार इनके नाम, व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व के विषय में भी संशय है। आधुनिक विद्वानों में यह संशय है कि संस्कृत ज्ञान परम्परा में भर्तृहरि नाम के एक ही विद्वान् थे अथवा दो विद्वान् हुए। क्या वाक्यपदीयम् नामक व्याकरणदर्शन का ग्रन्थ तथा शतकत्रय नामक गीतिकाव्य के ग्रन्थ के रचनाकार एक ही भर्तृहरि हैं, अथवा यह दोनों अलग-अलग व्यक्ति हैं? यदि अलग-अलग व्यक्ति हैं, तो इनका काल-निर्धारण भी अलग-अलग होना चाहिये। ज्ञात हो कि व्याकरणशास्त्र में महाभाष्यकार पतंजलि के पश्चात् सर्वाधिक प्रामाणिक आचार्य भर्तृहरि ही माने जाते हैं। इन्होंने बीजरूप में उपस्थित व्याकरण दर्शन को एक समग्र दर्शन बनाया। कीथ आदि पाश्चात्य विद्वानों ने दोनों भर्तृहरि को अभिन्न व्यक्ति माना है। इन्हें एक ही व्यक्ति मानने के कारणरूप में एक तर्क यह भी दिया जाता है कि नीतिशतक के मंगलाचरण में उद्धृत परब्रह्म तथा वाक्यपदीयम् के शब्दब्रह्म के स्वरूप में एकता दिखायी देती है। अतः सम्भवतः इन दोनों का रचनाकार एक ही व्यक्ति है। किन्तु भारतीय विद्वान् जैसे बलदेव उपाध्याय ने अपने ग्रन्थ 'संस्कृत साहित्य का इतिहास' में महावैयाकरणी भर्तृहरि और महाकवि भर्तृहरि को एक ही व्यक्ति के रूप में नहीं स्वीकार किया है। युधिष्ठिर मीमांसक, जिन्होंने संस्कृत व्याकरणशास्त्र के इतिहास पर सर्वाधिक प्रमाणिक ग्रन्थ की रचना की है, उन्होंने भी कृतियों की विषय-वस्तु की विभिन्नता के आधार पर तीन भर्तृहरि के होने की सम्भावना प्रकट की है। युधिष्ठिर मीमांसक के अनुसार यह कृतियाँ इस प्रकार हैं–

1. महाभाष्य-दीपिका
2. वाक्यपदीय-तीन खण्ड
3. वाक्यपदीय की स्वोपज्ञ वृत्ति-प्रथम और द्वितीय काण्ड
4. नीतिशतक, श्रृंगारशतक और वैराग्यशतक
5. जैमिनीय मीमांसा वृत्ति
6. वेदान्तसूत्रवृत्ति
7. शब्दधातुसमीक्षा
8. भट्टिकाव्य
9. भागवृत्ति

इनमें से प्रथम तीन ग्रन्थ व्याकरणशास्त्र से सम्बन्धित हैं, अन्य गीतिकाव्य, मीमांसा-दर्शन, वेदान्तदर्शन इत्यादि से सम्बन्धित हैं। अतः भर्तृहरि एक ही व्यक्ति हैं, या एक से ज्यादा, इस विषय में विद्वानों के मध्य एकमत स्थापित नहीं हो पाया है। परिणामतः इनके काल के सम्बन्ध में भी विवाद है। उमाशंकर शर्मा 'ऋषि' ने संस्कृत साहित्य का इतिहास में इनका समय 400 ई. से 600 ई. के बीच का माना है। किन्तु अधिकांश विद्वान् इनका समय छठीं शताब्दी के अन्त का मानते हैं और समस्या यह है कि कुछ विद्वान् इनका काल-निर्धारण एक ही भर्तृहरि मानकर करते हैं और कुछ इन्हें वैयाकरणशास्त्री से अलग मानकर करते हैं। अतः इनके जन्म-काल को लेकर इस प्रकार के मत हैं–

1. चीनी यात्री इत्सिंग के यात्राविवरण से यह स्पष्ट होता है कि भर्तृहरि नाम के वैयाकरण की मृत्यु 659 ईस्वी में हुई थी।
2. वाक्यपदीयम् के भर्तृहरि से एकता स्थापित करने पर इनका काल ७वीं शताब्दी से पूर्व का मानेंगे।
3. जनश्रुतियों में भर्तृहरि राजा विक्रमादित्य के ज्येष्ठ भ्राता माने जाते हैं। ऐतिहासिक साक्ष्यों के अनुसार विक्रमादित्य ने 644 ई. में कहरुर की लडाई में हूणों को पराजित किया था, अतः भर्तृहरि भी इसी काल के रहे होगें।
4. विद्वानों के अनुसार भारतीय कवि अमरुक की रचना अमरुकशतक भर्तृहरि के श्रृंगारशतक से विशेषरुप से प्रभावित है, अमरुकशतक में इसके पर्याप्त प्रमाण मिलते हैं। अमरुक का काल लगभग 650 ई. से 750 ई. के मध्य माना जाता है, अवश्य ही भर्तृहरि का काल इनके पूर्व रहा होगा, इस आधार पर भर्तृहरि का जन्मकाल ६वीं शताब्दी का उत्तरार्ध माना जा सकता है।
5. इस मत से बिल्कुल भिन्न एक मत विद्वानों का यह भी है कि इनका काल ई.पू. प्रथम शताब्दी है, इस मत के समर्थक विद्वान् भर्तृहरि को कालिदास के समकालीन मानते हैं। कालिदास का समय ई.पू. प्रथम शताब्दी माना जाता है। भर्तृहरि द्वारा रचित श्लोक अनेक कवियों के ग्रन्थों में प्राप्त हैं, जिनमे से कालिदास का अभिज्ञानशाकुन्तलम् भी है। नीतिशतक का 'भवन्ति नम्रास्तरवः फलागमैः' नामक श्लोक अभिज्ञानशाकुन्तलम् में उद्धृत है। स्पष्ट है कि कालिदास कुछ अंश तक अवश्य ही भर्तृहरि के काव्य से प्रभावित रहे होंगे तथा कालिदास राजा विक्रमादित्य

के नवरत्नों में से एक माने जाते हैं, विक्रमादित्य भर्तृहरि के कनिष्ठ भ्राता माने जाते हैं, अतः इस आधार पर भर्तृहरि कालिदास के समकालीन अथवा इनके कुछ काल पूर्व ही रहे होंगे। अतः इस मत के अनुसार ई.पू. प्रथम शताब्दी के आस-पास का समय भर्तृहरि का होना चाहिये।

युधिष्ठिर मीमांसक ने भर्तृहरि के द्वारा रचित ग्रन्थों का उल्लेख किया है, इसकी सूची पूर्व के पृष्ठ में प्राप्त हो चुकी है। इन ग्रन्थों में से 'वाक्यपदीयम्' तथा 'सुभाषितत्रिशती' अपनी विषयवस्तु की महत्ता के कारण प्रसिद्ध है। वाक्यपदीयम् व्याकरण दर्शन का मुकुट शिरोमणि है एवं शतकत्रय संस्कृत काव्य जगत् के मुक्तक काव्यों का एक अनुपम उदाहरण है। भर्तृहरि ने शृंगारशतक के 99वें और 100वें श्लोक में मनुष्य के त्रिविध स्वभाव के विषय में स्पष्टतः संकेत दिया है। द्रष्टव्य है–

वैराग्ये सञ्चरत्येको नीतौ भ्रमति चापरः।
शृङ्गारे रमते कश्चिद्भुवि भेदाः परस्परम्।।
यद्यस्य नास्ति रुचिरं तस्मिंस्तस्याऽस्पृहा मनोज्ञेऽपि।
रमणीयेऽपि सुधांशौ न मनः कामः सरोजिन्याः।।

(शृंगारशतक–99,100)

कवि के अनुसार मनुष्य वैराग्य, नीति या फिर शृंगार में से किसी एक पर आश्रित रहकर अपना जीवन-यापन करता है। अतः वह अपनी रुचि के अनुसार अपने लिये किसी एक मार्ग का चयन कर सकता है। सम्भवतः इसी दृष्टि को आधार बनाकर कवि ने तीनों शतकों की रचना की। भर्तृहरि के शतकों के नाम से इनकी विषय-वस्तु का भान हो जाता है। नीतिशतक में मनुष्य-जीवन की सार्थकता हेतु नीतियों का विवेचन, शृंगारशतक में शृंगार एवं वैराग्यशतक में वैराग्य का वर्णन है।

14.3 भर्तृहरि का सामाजिक अनुभव

भर्तृहरि के सामाजिक अनुभव के अन्तर्गत नीतिपरक सिद्धान्त, आध्यात्मिक सिद्धान्त, राजनैतिक सिद्धान्त आदि हैं, जो मनुष्य को सार्थक जीवन व्यतीत करने के लिये उच्चकोटीय दृष्टि प्रदान करते हैं। इन्होंने स्वयं भोगमय और त्यागमय जीवन का अनुभव प्राप्त किया है, अतः ये दोनों ही मार्गों के परिणाम से पूर्णरूपेण परिचित हैं। कवि दोनों मार्गों में से किसी एक मार्ग का चयन करने का परामर्श देते हैं। भर्तृहरि का यह प्रबल विश्वास है कि मनुष्य दैव (भाग्य) और कर्म दोनों के अधीन है। किन्तु भाग्य और कर्म में कर्म की ही प्रधानता है। कर्म ही हमारे कर्मफल को सुनिश्चित करते हैं। कवि कहते हैं–

नैवाकृतिः फलति नैव कुलं न शीलं
विद्यापि नैव न च यत्नकृतापि सेवा।
भाग्यानि पूर्वतपसा खलु सञ्चितानि
काले फलन्ति पुरुषस्य यथैव वृक्षाः।।

(नीतिशतक–97)

सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की एकसमान रूप से स्वीकृति है। अतः कवि ने वैराग्य के साथ-साथ अर्थ (धन) की भी महत्ता बतायी है। सामाजिक व्यक्ति के लिये धनवान् होना भी आवश्यक होता है, क्योंकि धनी व्यक्ति ही समाज में कुलीन, गुणज्ञ, वक्ता और दर्शनयोग्य होता है।

भर्तृहरि ने स्त्रियों के स्वाभाविक और औपाधिक गुणों के विषय में तो एक सम्पूर्ण शतक की रचना कर डाली है। यद्यपि स्त्रियों के विषय में उनका दृष्टिकोण पक्षपातपूर्ण दिखता है, सम्भवतः इसका कारण इनके व्यक्तिगत अनुभव हैं। इन्होंने स्वयं अपनी स्त्री के विश्वासघात का श्रृंगारशतक में वर्णन किया है। इनके अनुसार स्त्री अबला नहीं अपितु सबला है, क्योंकि समस्त पुरुष उसके शारीरिक सौन्दर्य, यौवन, कुटिलता इत्यादि के सम्मुख नतमस्तक हो जाते हैं। कवि के समय में वेश्याओं को भी सामाजिक मान्यता प्राप्त थी, यद्यपि उनसे भी दूर रहना ही पुरुषों के लिये श्रेयस्कर माना जाता रहा है। इनके शतकों से यह स्पष्ट होता है कि भर्तृहरिकालीन समाज में विद्वानों का बहुत महत्त्व है। राजा भी विद्वानों की अवहेलना नहीं कर सकता है। विद्वान् सदैव समाज में श्रेष्ठ स्थान को प्राप्त होता है। विपत्ति में धैर्य, ऐश्वर्य में क्षमा, सदन में वाक्पटुता, स्वयश में रुचि और शास्त्र में व्यसन–यह सब श्रेष्ठ पुरुष रूप विद्वान् के लक्षण होते हैं। विद्वानों के विषय में लिखते हुए इन्होंने राजा में रहने वाले कई स्वाभाविक गुणों पर प्रकाश डाला है। इस प्रकार भर्तृहरि के शतकों के माध्यम से इनके सामाजिक अनुभव का ज्ञान प्राप्त होता है।

बोध प्रश्न 1

1. निम्नलिखित प्रश्नों के ठीक उत्तरों पर सही (√) का चिह्न लगाइये।
   (i) कविकण्ठाभरण के प्रणेता हैं – भर्तृहरि/क्षेमेन्द्र
   (ii) भर्तृहरि को शैव या वेदान्तोपासक मानते हैं – बलदेव उपाध्याय/डॉ. विश्वेश्वर
   (iii) नीतिशतक के मंगलाचरण में स्तुति है – कृष्ण/परब्रह्म
   (iv) 'महाभाष्यदीपिका' ग्रन्थ सम्बन्धित है – मीमांसादर्शन/व्याकरणशास्त्र
   (v) भर्तृहरि की माता का नाम है– सुशीला देवी/मामल्ल देवी
2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये–
   (i) ..... ने भर्तृहरि के द्वारा रचित ग्रन्थों की सूची का उल्लेख किया है। (युधिष्ठिर मीमांसक/कुमारिलभट्ट)
   (ii) भर्तृहरि ने अपनी स्त्री के विश्वासघात का वर्णन ..... में किया है। (वैराग्यशतक/श्रृंगारशतक)
   (iii) भर्तृहरि के पिता का नाम .....है। (वीरसेन/भीमसेन)
   (iv) अमरुशतक के प्रणेता .....हैं। (भर्तृहरि/अमरुक)

अभ्यास प्रश्न 1

1. भर्तृहरि के जीवन-वृत्त पर प्रकाश डालिये।
2. भर्तृहरि के सामाजिक अनुभव पर टिप्पणी लिखिये।

14.4 शतकत्रय का परिचय

संस्कृत काव्य-क्षेत्र दो भागों मे विभक्त है– दृश्य-काव्य और श्रव्य-काव्य। श्रव्य काव्य के तीन उपभेद हैं–पद्य, गद्य और चम्पू। पद्य काव्य के भी तीन उपभेद हैं– महाकाव्य, खण्डकाव्य और गीतिकाव्य। गीतिकाव्य के अन्तर्गत मुक्तक काव्य आते हैं और मुक्तक काव्य की मुख्य विशेषता यह होती है कि इसमें एक ही पद्य में या तो किसी एक रस की पूर्ण अभिव्यक्ति होती है या किसी अत्यन्त उपयोगी विषय का वर्णन रहता है। अग्निपुराण

में मुक्तक काव्य का लक्षण इस प्रकार है– **मुक्तकं श्लोक एकैकंचमत्कारक्षमं सताम्** अर्थात् मुक्तक काव्य में प्रत्येक श्लोक स्वतन्त्र रूप से अपने सम्पूर्ण अर्थ का प्रकाशन करते हुए सहृदय में चमत्कार उत्पन्न करता है। इस दृष्टिकोण से भर्तृहरिकृत नीतिशतक अन्य मुक्तकों की तुलना में श्रेष्ठ है। ध्यातव्य है कि साहित्यसंगीतकलाविहीनः आदि प्रसिद्ध श्लोक नीतिशास्त्र में ही कहा गया है।

नीतिशतक में १११, श्रृंगारशतक में १०३ और वैराग्यशतक में १११ श्लोक हैं। शतकों की शैली प्रसादयुक्त है, जिसमें माधुर्य, पदलालित्य एवं भावप्रवणता है। भाषा भी सरल, प्रवाहपूर्ण, परिष्कृत एवं प्रांजल है। इनकी भाषा अत्यन्त स्वाभाविक है, जिसके कारण पद्य को पढकर स्वतः उसका भावार्थ स्पष्ट हो जाता है। कवि का भाव एवं प्रत्येक शतक में प्रयोग की हुई भाषा का अद्‌भुत सामंजस्य ही कवि की मुख्य विशेषता है। वैदर्भी रीति में इन्होंने अपने भावों को अभिव्यक्त किया है। इनके काव्य में दीर्घ समासों का प्रयोग नगण्य है। छन्दों और अलंकारो का प्रयोग भी सावधानी के साथ किया गया है। छन्दों में शिखरिणी, उपजाति, स्रग्धरा, वसन्ततिलका का प्रयोग बहुलता के साथ है। शार्दूलविक्रीडित इनका सबसे प्रिय छन्द प्रतीत होता है। अलंकारों में उपमा, रूपक, दृष्टान्त, स्वभावोक्ति और अतिशयोक्ति की प्रचुरता है। भाषागत और काव्यगत विशेषता के अतिरिक्त भर्तृहरि की और अन्य मुख्य विशेषता है–पद्य और वाक्यांश के रूप में सुभाषितों, लोकोक्तियों के द्वारा मानव-जीवन के आदर्श को प्रस्तुत करना। इन सुभाषितों एवं लोकोक्तियों के माध्यम से कवि ने जो भी समाज तक पहुंचाने का प्रयत्न किया है, उसमें वह पूर्णतया सफल हुए हैं और यही लोकोक्तियां कवि को वर्तमान में भी प्रासंगिक बनाये रखती हैं। इनकी लोकोक्तियां मनुष्य जीवन के सर्वांगीण विकास का संकेत देती हैं। व्यावहारिक तथा सांसारिक पक्ष से प्रारम्भ करके आध्यात्मिकता की ओर ले जाने में प्रेरणा प्रदान करती हैं। तीनों शतकों में लिखी गई लोकोक्तियां तथा सुभाषित में से कुछ प्रमुख का विवरण संक्षेप में इस प्रकार है–

नीतिशतक के सुभाषित वाक्य–विभूषणं मौनमपण्डितानाम् (श्लोक ७), न हि गणयति क्षुद्रो जन्तुः परिग्रहफल्गुताम् (श्लोक ६), विवेकभ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः (श्लोक १०), मूर्खस्य नास्त्यौषधम् (श्लोक ११), सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम् (श्लोक २३), सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः (श्लोक ५८), दिनस्य पूर्वार्धपरार्धभिन्ना छायेव मैत्री खलसज्जनानाम् (श्लोक ६०), न निश्चितार्थाद्विरमन्ति धीराः (श्लोक ८१) इत्यादि। इसके अतिरिक्त नीतिशतक की कुछ अन्य प्रमुख सूक्तियां इस प्रकार हैं– अवस्था वस्तूनि प्रथयति संकोचयति च। कुत्स्याः स्युः कुपरीक्षका न मणयो यैरर्घतः पातिताः। न्यायात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः। भवन्ति नम्रास्तरवः फलागमैः। मूर्खस्य नास्त्यौषधम्। वाग्भूषणं भूषणम्। विद्याविहीनः पशुः। शीलं परं भूषणम् इत्यादि।

श्रृंगारशतक के सुभाषित वाक्य– किमिहं न हि रम्यं मृगदृशः (श्लोक ६), कं न वशं कुरुते भुवि रामा (श्लोक ६), पुण्यैर्विना न हि भवन्ति समीहितार्थाः (श्लोक १७), विपदि हन्त सुधापि विषायते (श्लोक ३४), कन्दर्पदर्पदलने यौवनादन्यदस्ति (श्लोक ७०), हतमपि निहन्त्येव मदनः (श्लोक ६३), प्रियः को नाम योषिताम् (श्लोक ८०) इत्यादि।

वैराग्यशतक के सुभाषित वाक्य– अहह गहनो मोहमहिमा (श्लोक २०), सर्वं यस्य वाशादगात्स्मृतिपदं कालाय तस्मै नमः (श्लोक ३६), मनसि च परितुष्टे कोऽर्थवान् को द्ररिद्रः समीहामहे (श्लोक ६२), न जाने संसारः किममृतमयः किं विषमयः (श्लोक ८६), मन्ये ते परमेश्वराः शिरसि यैर्बद्धा न सेवांजलिः (श्लोक ६३), हा कष्टं पुरुषस्य जीर्णवयसः पुत्रोऽप्यमित्रायते (श्लोक ११३) इत्यादि।

इसके अतिरिक्त इन शतकों की विषय-वस्तु इस प्रकार है

14.4.1 नीतिशतक

नीतिशतक नाम से स्पष्ट है कि यह मनुष्य के जीवन की विभिन्न परिस्थितियों के अनुरूप नीतियों का वर्णन करती है। इसके विषय में विस्तार से आगे कहा जायेगा।

14.4.2 शृंगारशतक

ग्रन्थ के नामकरण से स्पष्ट है कि शृंगारशतक में शृंगार का वर्णन है, जिसमें स्त्री-सौन्दर्य की मोहकता, इसके रूपजाल एवं विभिन्न-विलास का वर्णन है। ध्यातव्य है कि यहाँ मंगलाचरण में कामदेव को नमस्कार किया गया है, जिसके प्रहार से मनुष्य तो क्या ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी अपनी रक्षा नहीं कर सके हैं। इस प्रकार मंगलाचरण में कामदेव की आराधना करना-स्वयं में एक अपवाद कहा जा सकता है, क्योंकि सामान्यरूप से संस्कृत साहित्य में मंगलाचरण में त्रिदेवों अथवा किसी देवी की अर्चना देखी जाती है। अतः स्पष्ट है इस वस्तुनिर्देशात्मक मंगलाचरण से इस शतक की विषय-वस्तु का ज्ञान करा दिया जाता है। मंगलाचरण का श्लोकार्थ इस प्रकार है कि जिसने ब्रह्मा, विष्णु, महेश को भी स्त्रियों के गृहकार्य करने के लिये दास बना रखा है, जिसके प्रहार से कोई मनुष्य और देवता भी नहीं बच सके हैं, ऐसे कामदेव को नमस्कार है। मंगलाचरण के पश्चात् के श्लोकों में स्त्रियों के विलासपूर्ण भाव–व्यवहार की चर्चा करते हुए उसकी निन्दा की गयी है। कवि के अनुसार अर्धनेत्र से कटाक्ष करना, मीठी वाणी बोलना, लज्जापूर्वक हँसना, लीला करते हुए मन्द-मन्द चलना और फिर घूमकर खड़ी हो जाना, ये स्त्रियों के अलंकार भी हैं एवं शस्त्र भी हैं। अपने शारीरिक गुणों से यह सभी पुरुषों को अपने वश में कर लेती हैं। पुरुष को सुन्दर स्त्री के बिना जीवन ही व्यर्थ लगता है। पुरुष को मृगनयनी स्त्री के बिना समस्त संसार अन्धकारमय प्रतीत होता है–

सति प्रदीपे सत्यग्नौ सत्सु तारारवीन्दुषु।

विना मे मृगशावाक्ष्या तमोभूतमिदं जगत्।।१४।।

कवि कहते हैं कि पण्डितों के जीवनयापन के लिये दो ही मार्ग सुलभ हैं प्रथम या तो वह तत्त्वज्ञानरूपी अमृत रस में स्नान करके अपनी बुद्धि को निर्मल कर ले या फिर किसी सुन्दर शरीर वाली स्त्री जिसका स्तन पुष्ट हो और जघन भोगयोग्य हो, उसकी शरण में जाकर जीवन व्यतीत करे। भर्तृहरि के अनुसार साथ रहने पर थोड़ा-थोड़ा नेत्रों को बन्द करके जो एक युगल को प्राप्त होता है, वही वास्तव में कामदेव का पुरुषार्थ है–

आमीलितनयनानां यः सुरतरसोऽनुसंविदं कुरुते।
मिथुनैर्मिथोऽवधारितमवितथमिदमेव कामनिर्बहणम्।।२७।।

ऋतुएं भी कामदेव की सहायक होती हैं, अतः कामदेव से बच पाना अत्यन्त दुष्कर है। किन्तु यही मोह लेने वाली स्त्री दुःख का कारण बन जाती है, जब यह नेत्रों से दूर हो जाती है। यह स्त्रियां दुश्चरिता भी होती हैं। कवि के अनुसार स्त्रियाँ वार्तालाप किसी अन्य पुरुष से करती हैं, विलासपूर्वक किसी अन्य को देखती हैं और उसी समय किसी दूसरे से मिलने की चाह हृदय में रखती हैं, अतः वास्तव में स्त्रियों का कोई भी प्रिय नहीं होता है। **'मधु तिष्ठति वाचि योषितां हृदि हालाहलमेव केवलम्'** अर्थात् इनके अधरों में अमृत और हृदय में विष रहता है। यह ऐसी सर्परूपा है, जिसकी कोई औषधि नहीं है। नारियों में

भी वेश्याएं और ज्यादा हानिकारक होती हैं। इस प्रकार कवि विविध प्रकार से स्त्री के दुश्चरित्र की व्याख्या करते हुए अपने शृंगारशतक का समापन करते हैं।

14.4.3 वैराग्यशतक

कवि को ऐसा प्रतीत होता है कि स्त्री-सौन्दर्य में लीन रहने पर पुरुष की मात्र हानि होती है, अतः स्त्री-मोह छोड़कर वैराग्य ग्रहण करना उत्तम है, क्योंकि यही शान्ति और आनन्द का मार्ग प्रदान करता है। इस दृष्टि से शृंगार के पश्चात् वैराग्यशतक की रचना का औचित्य तर्कसंगत प्रतीत होता है। अतः वैराग्यशतक के मंगलाचरण में सदाशिव के द्वारा कामदेव को भस्म करते हुए बताया गया है। भर्तृहरि के अनुसार सांसारिक सुख के पीछे भागते हुए मनुष्य को कभी भी अपने आकांक्षित वस्तु की प्राप्ति नहीं हो पाती है। वृद्ध हो जाने पर भी उसकी तृष्णा कभी समाप्त नहीं होती है। वह कभी भी निःस्वार्थ भाव से कर्म नहीं करता है। किन्तु यदि वह स्वयं से विषयों का त्याग करे तो उसका त्याग महा-सुख का कारण बनता है, इसके विपरीत जब विषय मनुष्य को त्यागते हैं, तो मन को बहुत सन्ताप देते हैं। अतः सांसारिक विषयों का स्वयं त्याग करना ही श्रेयस्कर है–

अवश्यं यातारश्चिरतरमुषित्वाऽपि विषया
वियोगे को भेदस्त्यजति न जनो यत्स्वयममून्।
व्रजन्तः स्वातन्त्र्यादतुलपरितापाय मनसः
स्वयं त्यक्त्वा ह्येते शमसुखमनन्तं विदधाति।।१६।।

अतः तृष्णा का त्याग करके शान्ति, सन्तोषादि गुण का ग्रहण करना चाहिये। इससे स्वयं का मन प्रसन्न होता है और शनैः शनैः आत्मज्ञान अर्थात् विवेक-ज्ञान प्राप्त हो जाता है। संसार के सारे पदार्थ किसी न किसी भय के स्रोत हैं, यथा भोग से रोग का भय, उत्तम कुल प्राप्त होने पर च्युति का भय, बलवान् होने पर शत्रुता का भय इत्यादि। किन्तु वैराग्य ही ऐसा पदार्थ है जिससे अभय प्राप्त होता है–

भोगे रोगभयं कुले च्युतिभयं वित्ते नृपालाद्भयं
मौने दैन्यभयं बले रिपुभयं रूपे जराया भयम्।
शास्त्रे वादभयं गुणे खलभयं काये कृतान्ताद्भयं
सर्वं वस्तु भयान्वितं भुवि नृणां वैराग्यमेवाभयम्।।३४।।

कवि बड़े ही सुन्दर तरीके से संसार की विभिन्न उपमाओं के माध्यम से व्याख्या करते हैं–

आशा नाम नदी मनोरथजला तृष्णातरङ्गाकुला
रागग्राहवती वितर्कविगहा धैर्यद्रुमध्वंसिनी।
मोहावर्तसुदुस्तराऽतिगहना प्रोत्तुङ्गचिन्तातटी
तस्याः पारगता विशुद्धमनसो नन्दन्ति योगीश्वराः।।४३।।

अतः आशा नाम की नदी में मनोरथरूपी जल भरा है और यह तृष्णारूपी तरंगों से पूर्ण है, प्रीति ही इसमें मगर है, नाना प्रकार के तर्क इसमें पक्षी हैं इत्यादि। इसके विपरीत जिसे वैराग्य प्राप्त हो गया है या फिर जो वैराग्यप्राप्ति के लिये तत्पर है, उसके लिये हाथ बर्तन हैं, घूमते-फिरते जो कुछ मिले, वह उत्तम अन्न है, दिशायें ही वस्त्र हैं, पृथ्वी ही पलंग है। ऐसे वैराग्यप्राप्त जन को "जो तुम हो, वही हम हैं, और जो हम हैं, वही तुम हो। परस्पर कुछ भेद नहीं है" ऐसा बोध सदैव रहता है। कवि के अनुसार वैराग्य प्राप्त व्यक्ति को सदैव माया-मोह के बन्धन से परे रहकर शिव की भक्ति करते रहना चाहिये। इस प्रकार विभिन्न प्रकार से सांसारिक वस्तुओं की अनित्यता का समर्थन करते हुए ईश्वर को सर्वश्रेष्ठ बताते हुए उसकी भक्ति की सहायता से वैराग्य के द्वारा विवेक-ज्ञान तक पहुंचने का मार्ग इस शतक का अभिधेय है।

बोध प्रश्न 2

1. निम्नलिखित प्रश्नों के ठीक उत्तरों पर सही (√) का चिह्न लगाइये।

   (i) गीतिकाव्य के अन्तर्गत आते हैं – मुक्तक काव्य/महाकाव्य

   (ii) नीतिशतक में श्लोकों की संख्या है – 103/111

   (iii) भर्तृहरि का प्रिय छन्द है – उपमा/शार्दूलविक्रीडित

   (iv) 'सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगमः' सूक्ति वाक्य है – नीतिशतक/वैराग्यशतक

   (v) शृंगारशतक के मंगलाचरण में स्तुति की गयी है – शंकर/कामदेव

   (vi) 'अहह गहनो मोहमहिमा' सूक्ति वाक्य है – वैराग्यशतक/शृंगारशतक

2. श्रव्य काव्य के कितने उपभेद हैं ? उनके नाम लिखिये।

   .....

   .....

3. अग्निपुराण के अनुसार मुक्तक काव्य का लक्षण लिखिये।

   .....

   .....

अभ्यास प्रश्न 2

1. शृंगारशतक का प्रतिपाद्य विषय क्या है?
2. शतकत्रय के दस सुभाषित लिखिये।

14.5 नीतिशतक का प्रतिपाद्य

इस ग्रन्थ में कवि ने नीतिशास्त्र के सार्वभौमिक सिद्धान्तों की चर्चा की है। नीतिशतक व्यावहारिक उपदेशों का भण्डार है। विद्वानों ने नीतिशतक की विषयवस्तु को ११ पद्धतियों में बांटा है, जो इस प्रकार हैं–

(१)ब्रह्म की स्तुति, (२) मूर्ख निन्दा, (३) विद्वत्पद्धति, (४) मानशौर्यपद्धति, (५) अर्थपद्धति, (६) दुर्जनपद्धति, (७) सुजनपद्धति, (८) परोपकार पद्धति, (९) धैर्य-पद्धति, (१०) दैव-प्रशंसा और (११) कर्म-पद्धति।

ब्रह्म स्तुति के अन्तर्गत मंगलाचरण में शान्त-ज्योतिस्वरूप ब्रह्म को नमस्कार किया गया है। मूर्खनिन्दा प्रकरण में भर्तृहरि ने तीन प्रकार के मनुष्य की गणना की है– अज्ञ, विशेषज्ञ और अल्पज्ञ। इनमें से ज्ञानी, अज्ञानी क्रमशः अतिसुखपूर्वक तथा सुखपूर्वक साध्य हैं, किन्तु अल्पज्ञ को ब्रह्मा भी नहीं साध सकते हैं। उसे किसी भी विषय में समझाना असम्भव है–

अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः।
ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मापि नरं न रञ्जयति।।३।।

लोक और शास्त्र में सभी प्रकार के रोगों के लिये औषधियाँ हैं, किन्तु मूर्खता के लिये कोई भी औषधि नहीं है। विद्वत्पद्धति में विद्वान् की महत्ता बतायी गयी है। कवि कहते हैं कि किसी भी राजा के राज्य में यदि कोई कवि विद्वान् निर्धन है, तो यह कवि की नहीं, अपितु राजा की निर्धनता है, भला मणि के मोल को न समझने से मणि का मूल्य कैसे कम हो सकता

है, मोल तो उस कुपरीक्षक का कम होता है, जिसने मणि का उचित मूल्य नहीं लगाया। विद्वान् प्रत्येक स्थिति में राजा से श्रेष्ठ होता है। मानशौर्य पद्धति में कहा गया है कि भगवान् की कृपा से ही किसी को सच्चरित्र पुत्र, पतिव्रता स्त्री, सर्वदा अनुग्रह करने वाले स्वामी प्राप्त होते हैं। भगवत्कृपा न हो तो समस्तसाधनसम्पन्न व्यक्ति भी विधि के विधान को नहीं टाल सकता है। जिस प्रकार से कई दिन से भूखा, दुर्बल, वृद्धावस्था को प्राप्त, शक्तिहीन, तेजहीन गजराज किसी भी स्थिति में सूखी घास नहीं खाता है, अपनी परिस्थितियों से समझौता नहीं करता है, उसी प्रकार से सत्पुरुषजन दुष्टों से किसी भी स्थिति में याचना नहीं करते हैं, न्यायपूर्वक जीविकोपार्जन करते हैं। प्राण का भय होने पर भी वह दुष्कर्म नहीं करते हैं। विपत्ति में भी श्रेष्ठजनों का आचरण नहीं त्यागते हैं। अर्थपद्धति अथवा द्रव्यप्रशंसा के अन्तर्गत कवि ने धन के महत्त्व को समझाया है। धन के न रहने पर या फिर समाप्त हो जाने पर मनुष्य की स्थिति परिवर्तित हो जाती है। जिसके पास द्रव्य अर्थात् धन होता है, वही व्यक्ति कुलीन, पण्डित, गुणज्ञ, वक्ता और दर्शनीय हो जाता है। धन की गति भी तीन प्रकार की होती है–दान, भोग और नाश। जिसने धन का न भोग किया, न दान दिया, उसके धन का स्वतः नाश हो जाता है–

दानं भोगो नाशस्तिस्त्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य।
यो न ददाति न भुङ्क्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति।।४३।।

इसके पश्चात् कवि ने दुर्जन पद्धति में दुष्ट व्यक्ति के चरित्र का वर्णन किया है। करुणा न करना, अकारण विग्रह करना, पराये धन और परायी स्त्री की चाह करना, अपने लोग और मित्रों की बात को न सुनना इत्यादि दुष्टजन के लक्षण होते हैं–

अकरुणत्वमकारणविग्रहः परधने परयोषित च स्पृहा।
सुजनबन्धुजनेष्वसहिष्णुता प्रकृतिसिद्धमिदं हि दुरात्मनाम्।।५२।।

गुणों में भी दोषारोपण करना इनका स्वभाव है। अतः इनकी दृष्टि में लज्जावान् पुरुष शिथिल, व्रतधारी दम्भी, पवित्र व्यक्ति पाखण्डी, शूर व्यक्ति निर्दयी, सीधा व्यक्ति मूर्ख होता है। ऐसे दुष्टजन यदि विद्वान् हों तो भी इनका त्याग ही उचित है। सुजन-पद्धति में भर्तृहरि ने सज्जन व्यक्ति का बखान किया है। सज्जन पुरुषों की सत्संग में वाञ्छा, नम्र व्यवहार, विद्या में व्यसन, अपनी स्त्री में ही अनुरक्ति, लोकोपवाद से भय, ईश्वर में भक्ति आदि की प्रवृत्ति होती है। वह सदैव विपत्ति में धैर्य, ऐश्वर्य में क्षमा, युद्ध में पराक्रम, स्वयश में रुचि रखता है–

विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा सदसि वाक्पटुता युधि विक्रमः।
यशसि चाभिरुचिर्व्यसनं श्रुतौ प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम्।।६३।।

सज्जन व्यक्ति का चित्त उसके समृद्धि काल में अत्यन्त कोमल रहता है और विपत्ति काल में शिला के समान कठोर हो जाता है। परोपकार पद्धति में परोपकार की महिमा का बखान किया है। परोपकारी पुरुष का स्वभाव फल लगे हुए वृक्ष के समान होता है, वृक्ष पर जितना भी फल लगता जाता है, वह उतना ही झुकता जाता है, उसी प्रकार परोपकार करने वाला व्यक्ति नम्र होता है–

भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमैर्नवाम्बुभिर्भूमिविलम्बिनो घनाः।
अनुद्धताः सत्पुरुषाः समृद्धिभिः स्वभाव एवैष परोपकारिणाम्।।७१।।

परोपकारी व्यक्ति सदैव ही प्रशंसनीय होते हैं, इनकी संगति में आकर दुर्जन भी गुणवान् हो जाता है। धैर्यपद्धति में कवि यह कहते हैं कि धीरवान् व्यक्ति अपने निश्चित लक्ष्य की प्राप्ति किये बिना किसी भी कार्य को बीच में नहीं छोड़ते हैं। इसीलिये तो समुद्र-मन्थन में अमृत-प्राप्ति न होने तक देवताओं ने विश्राम नहीं किया। इसी प्रकार धीर व्यक्ति कभी न्यायोचित

मार्ग का त्याग नहीं करता है। अतः विपत्ति आने पर भी सज्जन सन्तप्त नहीं होते हैं। कवि कहते हैं–

छिन्नोऽपि रोहति तरुः क्षीणोऽप्युपचीयते पुनश्चन्द्रः।
इति विमृशन्तः सन्तः सन्तप्यन्ते न विप्लुता लोके।।९८।।

दैव-प्रशंसा में भाग्य के बलवान् होने को समझाया है। भाग्य के प्रतिकूल होने पर मनुष्य का प्रयत्न कभी फलित नहीं होता है, इसीलिये बृहस्पति जैसा मन्त्री, वज्र जैसा शस्त्र, देवताओं की विशाल सेना और इन सबसे ऊपर विष्णु का इन्द्र पर अनुग्रह– इतने अनुकूल सहायक कारण होने पर भी देवताओं के राजा इन्द्र को असुरों से पराजित होना पड़ा। यह दुष्परिणाम भाग्य के कारण ही प्राप्त हुआ। भाग्यहीन पुरुष कहीं भी जाता है, विपत्ति उसके पीछे-पीछे जाती है। कर्म-पद्धति में कवि ने समझाया है कि भाग्य से ज्यादा बलवान् कर्म है। देवता, मनुष्य तथा कर्मफल आदि सब कर्म के ही अधीन रहते हैं। यह कर्म ही है, जिसने ब्रह्मा को निरन्तर सृष्टिकार्य करने में प्रवृत्त रखा, विष्णु को बारम्बार अवतार ग्रहण करने के लिये उद्यत किया तथा रुद्र को कपाल लेकर भिक्षा मांगने के लिये विवश किया–

ब्रह्मा येन कुलालवन्नियमितो ब्रह्माण्डभाण्डोदरे
विष्णुर्येन दशावतारगहने क्षिप्तो महासंकटे।
रुद्रो येन कपालपाणिपुटके भिक्षाटनं कारितः
सूर्यो भ्राम्यति नित्यमेव गगने तस्मै नमः कर्मणे।।९९।।

पूर्वजन्म में किये गये संचित कर्म ही मनुष्य के सहायक होते हैं। अच्छे कार्य के बिना अच्छे फल की प्राप्ति नहीं हो सकती है। अतः सदैव सत्कर्म करने चाहिये। अतः कार्य करने के पूर्व कार्य के विषय में सूक्ष्मता के साथ विचार कर लेना चाहिये। इस प्रकार भर्तृहरि ने इन प्रकरणों के माध्यम से मानव-जीवन के लिये उपयोगी उपदेशों का संग्रह नीतिशतक में किया है और यह उपदेश आज भी मनुष्य जीवन में अपनी सार्थकता बनाये हुए हैं।

बोध प्रश्न 3

1. नीतिशतक में कितनी पद्धतियाँ हैं ? उनके नाम लिखिये।

   .....

   .....

2. मूर्खनिन्दा प्रकरण में भर्तृहरि ने कितने प्रकार के मनुष्य की गणना की है ? लिखिये।

   .....

   .....

3. अर्थपद्धति के अन्तर्गत कवि ने किसका महत्त्व प्रतिपादित किया है ?

   .....

   .....

4. भर्तृहरि के अनुसार धन की कितनी गतियाँ हैं ?

   .....

   .....

5. भर्तृहरि ने दुर्जन व्यक्ति के क्या लक्षण स्वीकार किये हैं ?

   .....

   .....

6. परोपकारी व्यक्ति का स्वभाव कैसा होता है ?

.....

.....

अभ्यास प्रश्न 3

1. नीतिशतक के प्रतिपाद्य विषय पर टिप्पणी लिखिये।

14.6 सारांश

- भर्तृहरि का जीवन-परिचय प्राप्त हुआ। इनसे सम्बन्धित किंवदन्तियों, लोकोक्तियों का ज्ञान हुआ।
- भर्तृहरि के सामाजिक अनुभव के विषय में जानकारी प्राप्त की।
- शतकत्रय के माध्यम से भर्तृहरि के काव्य-वैशिष्ट्य का ज्ञान हो गया।
- शतकत्रय के अभिधेय अर्थात् विषय-वस्तु का ज्ञान प्राप्त हुआ। अतः भर्तृहरि का संस्कृत साहित्य में महत्त्व एवं उनका साहित्यिक योगदान स्पष्ट हुआ।
- नीतिशतक में प्रतिपादित विभिन्न पद्धतियों के विषय में जानकारी प्राप्त की।
- संक्षिप्त में मुक्तक काव्य के स्वरूप का ज्ञान हुआ।

14.7 शब्दावली

काय – शरीर

तिमिर – अन्धकार

विगलित – नष्ट होना

नितरां कुपित – अत्यन्त क्रुद्ध

वैदग्ध्यकीर्ति – चतुरता के यश

वित्त – धन

कपालपाणिपुटके – मस्तक के कंकाल को दोनों हाथों में थामकर

मदन – कामदेव

14.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. भर्तृहरिशतकत्रयम्, ददन उपाध्याय, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, २०१७
2. शतकत्रय में समाज और संस्कृति, डॉ. पुष्पा, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली २०१६
3. नीतिशतकम्, बलवान सिंह यादव, चौखम्बा संस्कृत भवन, वाराणसी, २००८
4. संस्कृत साहित्य का इतिहास, बलदेव उपाध्याय, शारदा निकेतन, वाराणसी, १९९९
5. संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास (छात्रोपयोगी संस्करण), रामनाथ त्रिपाठी शास्त्री (संपादक), चौखम्बा पब्लिशर्स, वाराणसी, २००३

14.9 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1. (i) क्षेमेन्द्र (ii) बलदेव उपाध्याय (iii) परब्रह्म (iv) व्याकरणशास्त्र (v) सुशीला देवी
2. (i) युधिष्ठिर मीमांसक (ii) श्रृंगारशतक (iii) वीरसेन (iv) अमरुक

बोध प्रश्न 2

1. (i) मुक्तक काव्य (ii) 111 (iii) शार्दूलविक्रीडित (iv) नीतिशतक (v) कामदेव (vi) वैरग्यशतक
2. श्रव्य काव्य के तीन उपभेद हैं – पद्य, गद्य और चम्पू।
3. अग्निपुराण के अनुसार मुक्तक काव्य का लक्षण इस प्रकार है– 'मुक्तकं श्लोक एकैकञ्चमत्कारक्षमं सताम्' अर्थात् मुक्तक काव्य में प्रत्येक श्लोक स्वतन्त्र रूप से अपने सम्पूर्ण अर्थ का प्रकाशन करते हुये सहृदय में चमत्कार उत्पन्न करता है।

बोध प्रश्न 3

1. नीतिशतक में 11 पद्धतियाँ हैं, उनके नाम इस प्रकार हैं– (1) ब्रह्म की स्तुति (2) मूर्ख निन्दा (3) विद्वत्पद्धति (4) मानशौर्यपद्धति (5) अर्थपद्धति (6) दुर्जनपद्धति (7) सुजनपद्धति (8) परोपकार-पद्धति (9) धैर्यपद्धति (10) दैव-प्रशंसा (11) कर्म-पद्धति
2. मूर्खनिन्दा प्रकरण में भर्तृहरि ने तीन प्रकार के मनुष्य की गणना की है – अज्ञ, विशेषज्ञ और अल्पज्ञ।
3. अर्थपद्धति के अन्तर्गत कवि ने धन का महत्त्व प्रतिपादित किया है।
4. भर्तृहरि के अनुसार धन की तीन गतियाँ हैं– दान, भोग और नाश।
5. करुणा न करना, अकारण विग्रह करना, पराये धन और परायी स्त्री की चाह करना, अपने लोग और मित्रों की बात को न सुनना इत्यादि दुर्जन व्यक्ति के लक्षण हैं।
6. परोपकारी व्यक्ति का स्वभाव फल लगे हुये वृक्ष के समान होता है, वृक्ष पर जितना भी फल लगता जाता है, वह उतना ही झुकता जाता है, उसी प्रकार परोपकारी व्यक्ति भी नम्र होता है।

अभ्यास प्रश्न

इन प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखें।